पृष्ठ-संख्या १३१ से १३८

षष्ठ प्रकरण

उ प सं हा र ...

।।।

षष्ठम् प्रकरण

- उ प सं हा र -

नारी को भारत वर्ष में प्राचीन काल से सम्मानपूर्ण दृष्टि से देखा गया है और इसके प्रमाण हमें वैदिक काल , उपनिषाद काल , सूत्र-काल इ. में यत्र-तत्र मिलते हैं । वैदिक काल की नारी को पारिवारिक जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान था । शिक्षा के पूर्ण अवसर प्राप्त थे । विवाह परिपक्व बुद्धि की अवस्था में होते थे । सामाजिक अथवा धार्मिक सभाओं तथा यज्ञों में वह संमिलित हो सकती थी । इस प्रकार उसका स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण था । इस समय नारी समाज को आदर की दृष्टि से देखा जाता था । आगे चलकर महाकाव्य-काल में उसका अपकर्ष शुरू हो गया । संस्कृत कअभिजात काल के काव्य में नारी शरीर और उसकी आत्मा का मनोहर चित्रण हुआ है ।

विवेच्य युग पूर्व काव्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि इस काल में अलग - अलग पंथों में नारीविषयक अलग-अलग धारणाएँ थीं । सिद्धों ने स्त्रियों के उपभोग को आवश्यक अनुष्ठान माना । नाथों ने उसे सिद्धि के मार्ग की बाधा समझा और वीर काव्य में वह अंतःपुर की सज्जा बन गई । कहीं कहीं उसका प्रेयसी रूप निखर आया । परंतु सर्वसाधारण रूप से इस काल की नारी को कवियों ने रनिवास की बंदिनी अथवा भोग्या के रूप में ही देखा है । संतों ने नारी के मादक कामिनी रूप की निंदा की और उससे बचने का उपदेश दिया । तथापि उन्हीं संतों ने नारी के पातिव्रत की, सतीत्व की, भूरि भूरि प्रशंसा की । सूफी कवियों ने नारी के रूप में ब्रह्म के दर्शन किए और नारी की शक्ति उसकी महत्ता और दिव्यता का वर्णन करके उसे अलग दृष्टि से देखा ।

रामचरित को अपने काव्य का विषय माननेवाले गोस्वामी तुलसीदास

तथा कृष्ण के गुणगान को अपना जीवित कर्तव्य समझनेवाले सूरदास ने सामान्य रूप से नारी के कामिनी रूप की उपेक्षा की और उसे अध्यात्म-मार्ग की रुकावट माना । परंतु इन्हीं कवियों ने नारी के भव्य और दिव्य आदर्शों को भी प्रस्तुत किया । तुलसीदास ने सीता, कौशल्या, सुमित्रा आदि आदर्श पात्रों की सर्जना की और नारी की महत्ता स्वीकार की । सूर ने भी कृष्ण की एकनिष्ठ प्रेमिका के रूप में राधा का अनुपम व्यक्तित्व सामने रखा । कहा जा सकता है कि उन्होंने नारी के वासनात्मक रूप की निंदा की है और उदात्त रूप की प्रशंसा ।

भक्ति-काल के बाद आनेवाले रीति-काल में लंबे समय तक दबी हुई वासना हुंकार हो उठी और उन्होंने नारी के रूप - सौंदर्य , स्वभाव, उसकी पुरुष-निष्ठा आदि को लेकर नायिका-भेद के चौखटों में उसे बांध दिया । इस युग के कवियों की नारी की ओर देखने की दृष्टि शृंगारिक, रसलोलुप और भोग-वादी जान पडती है ।

हिंदी के आधुनिक युग का उदय भारतेंदु युग के आरंभ के साथ माना जाता है । यह युग सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक दृष्टि से वैचारिक संघर्षों का युग था । इस काल में अशिक्षा, बालविवाह, विधवा विवाह, बहुविवाह आदि विषयों पर विपुलता से काव्य लिखा गया जिसमें उनका नारीविषयक दृष्टिकोण झलकता है । सुधारयुग के इस प्रात:काल में नारी की असहाय अवस्था पर गौर किया गया । नारी की वस्तुस्थिति के प्रति हार्दिक करुणा की भावना व्यक्त की गई । इसके उपरांत द्विवेदी काल में नारी के प्रति देखने का दृष्टिकोण और भी परिष्कृत हो गया । यह युग हिंदी साहित्य में क्रांति युग था । राजनैतिक क्षेत्र में महिलाएँ देश की स्वतंत्रता के लिए क्रियात्मक सहयोग देने लगी थीं । अत: नारी स्थिति के उत्कर्ष की ओर कवियों और समाजसेवकों

का ध्यान आकर्षित हुआ । नारी जागृति की दृष्टि से यह काल महत्त्वपूर्ण था । इसी समय मैथिलीशरण गुप्त जी ने आदर्श और यथार्थ का समन्वय करके नारी को उपेक्षिता, अबला, पतिता चित्रित कर उसका उद्धार करने का प्रयत्न किया ।नारी में पाई जानेवाली त्याग-भावना, क्षमाशीलता, प्रेम-भावना इन्हें प्रकाशित करके नारी को आदर की दृष्टि से देखा ।

हरिऔध जी ने ' प्रियप्रवास ' लिखकर नाना हावभाव, विभाव-कुशला ' राधा ' को युगीन परिप्रेक्ष्य में रखकर उसका परदु:खकातर लोकसेविका , लोक-निर्देशिका का रूप चित्रित किया । और युगों युगों से पाए जानेवाले राधा के व्यक्तित्व को नए आयाम से अलंकृत किया । इस प्रकार नारी के बाह्य एवं आंतरिक गुणों पर ध्यान देकर उसकी कल्याणकारी शक्तियों का यशोगान किया । इस युग के कवियों ने नारी को देखकर उसे मानवी रूप में चित्रित का दृष्टिकोण रखा ।

छायावादी काल में छायावादी कवियों ने नारी सौंदर्य के क्षेत्र में मानव और प्रकृति का आत्मिक संबंध प्रस्थापित कर , नारी अंगों के उपमान पकृति से लेकर , उसके सौंदर्य को स्वाभाविक रूप से विकसित और पल्लवित होने का मौका दिया । रूप सौंदर्य और भाव सौंदर्य दोनों में समन्वय प्रस्थापित कर आत्मिक भाव भूमि में प्रविष्ट होकर , इस सौंदर्यवती नारी का गान कर उसकी पवित्र व्यक्तित्व पर गर्व किया । इस युग के कवियों के नारी संबंधी दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन हुआ। सरल, निश्छल भावसौंदर्य की प्रतिमा नारी को पवित्र प्रेम की धडकनें प्रदान कर , प्रेयसी रूप को सामाजिक और नैतिक मान्यताओं से मुक्त किया ।

कवि पंत जी ने नारी के अनेक पहलुओं को प्रकाशमान कर उसका मनोहर

चित्रण किया । प्रसाद जी ने उसे माया , ममता, स्नेह की पुतली मानकर 'श्रद्धा' के रूप में देखा । निराला ने प्रेयसी, पत्नी, जननी, विधवा, शोषिता,पीड़िता आदि रूपों में देखा । महादेवी वर्मा ने प्रणयिनी ' वेदनामयी प्रणयिनी ' का रूप , विषाद-रूप में अंकित किया । कुल मिलाकर इन छायावादी कवियों की दृष्टि में नारी के बाह्य-सौंदर्य के प्रति वासना का भाव नहीं है । उन्होंने नारी के स्वरूप और महत्ता को स्पष्ट करते हुए, उसे देवी, माँ, सहचरी , प्राण आदि नामों से संबोधित कर , उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया ।

छायावाद कालीन राष्ट्रीय - सांस्कृतिक धारा के कवियों ने नारी जीवन की समस्याओं को मुखरित किया । ' दिनकर जी ' ने मंगलमय मातृत्व में नारी-जीवन की सार्थकता और परिपूर्णता देखी । नारी की अंतरंग व्यथा को 'रसवंती ' और ' रेणुका ' के माध्यम से वाणी दी और ' उर्वशी ' महा-काव्य का निर्माण करके चिरंतन नारी की उत्कट प्रेम भावना का चित्रण किया। माखनलाल चतुर्वेदी ने नारी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष का साथ देनेवाली संगिनी के रूप में देखा । छायावाद काल्य और छायावादोत्तर काल इनके संधिकाल में जिनका काव्य विकसित हुआ इनमें हालावादी कवि हरिवंशराय 'बच्चन ' ने नारी को पूर्णत: नई दृष्टि से देखा । उन्होंने नारी को पीडा-हारी, शांति-दायिनी, तृप्तिदायिनी, सौंदर्यवती माना और मादकता की जीतीजागती प्रतिमा के रूप में अंकित किया । उनकी यह ' मधुबाला' - भावना छायावादी कवियों की प्रेयसी भावनाओं से बहुत कुछ मिलती- जुलती है । बच्चन जी ने नारी के पत्नीरूप और मातृरूप को महत्ता को माना है और उसके बिना अपने आपको अधूरा समझा है ।

छायावादोत्तर काल में प्रगतिवादी प्रेरणा से प्रेरित होकर पुरुष दासता की शृंखलाओं में आबद्ध नारी को शोषिता, पीड़िता के रूप में देखा और उसे

हार्दिक सहानुभूति प्रदान की । वे नारी को समान प्रतिष्ठा प्रदान करने लगे और पुरुष के साथ समान अधिकारों की हकदार समझने लगे । उनकी नारी संबंधी विचारधारा मार्क्स के भौतिक आदर्श, फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक विज्ञान और युग के अन्य नवीन विचारों से प्रभावित है ।

' नई कविता ' की अधिकांश रचनाओं में नई शब्दावली, नई अभिव्यक्ति, नई वृत्तियाँ स्पष्ट हुई हैं । इन कवियों ने प्रणय के काव्यक्षेत्र में अपनी नई दृष्टि प्रकट की । जिसमें कहीं कहीं नारी का वासनात्मक रूप व्यक्त हुआ है और कहीं क्रांतिकारी रूप को अभिव्यक्ति हुई है । यह कवि नारी के कवी को विराट मायाविनी और जीवन को प्रेरित करनेवाली महाशक्ति कहकर पुकारा है ।

हम कह सकते हैं कि इस संघर्षपूर्ण युग में नारी पुरुष की केवल सहचरी नहीं बल्कि स्वच्छंद जीवन संगिनी बन रही है । इसका प्रतिबिंब नई कविता में स्पष्ट हुआ है । नए युग के नए कवियों की नई कविता में दृष्टिकोण अधिक यथार्थवादी जान पडता है ।

०